NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

सौंफ की वैज्ञानिक खेती

#लालू प्रसाद,[1] धनेश्वरी आर्य,[2]सुभाष चंद्र,[3]ह्रदेश शिवहरे,[4]राकेश कुमार

परिचय:

सौंफ मसाले सुगंध एवं स्वाद प्रदान करने में प्रमुख स्थान रखती है इसका प्रयोग अचार चटनी मुरब्बा शरबत बनाने में प्रयोग किया जाता है इसका प्रयोग पान आदि तथा कुछ रोगों के उपचार में प्रचुर मात्रा में होता है छोटी जूते में अधिक आय प्राप्त करने के लिए सौंफ की खेती का अपना एक विशेष स्थान है भारत के प्राय प्रत्येक प्रदेश में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जाती है जैसे उत्तर प्रदेश बिहार मध्य प्रदेश राजस्थान आदि।

जलवायु- सौंफ की खेती के लिए ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है बीजों के अच्छे विकास जमाव तथा अच्छे विकास के लिए गर्मी जलवायु सर्वोत्तम होती है।

भूमि-सौंफ की खेती के लिए बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है लेकिन मटियार दोमट भूमि में इसकी खेती की जा सकती है खेत तैयार करते समय दो जुताई मिट्टी पलटन वाले हल से तथा दो तीन जुताई देसी हल की सहायता से करके खेत को पाटा के माध्यम से समतल बना लेते हैं।

खाद एवं उर्वरक- सौंफ की खेती के लिए खाद 200 से 300 कुंतल प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है। इसके बाद 45 किलोग्राम नाइट्रोजन 40 किलोग्राम फास्फोरस 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है। नाइट्रोजन को दो टॉप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए।

बीज की मात्रा- सौंफ की खेती के लिए बीज 12-15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। लेकिन पौध को नर्सरी में उगाकर फिर उसके बाद खेत में रोपाई करके इसकी खेती की जाती है तब 4 से 5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बोने का समय-सौंफ की बुवाई सितंबर के अंतिम सप्ताह और अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक बुवाई की जाती है।

दूरी- सौंफ में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेमी पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखी

#लालू प्रसाद,[1]धनेश्वरी आर्य,[2]सुभाष चंद्र,[3]ह्रदेश शिवहरे,[4]राकेश कुमार

#शोध छात्र सब्जी विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

[1]शोध छात्रा कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

[3]शोध छात्र कृषि अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली(उत्तर प्रदेश)

[3$4]छात्र सब्जी विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

जाती है।

प्रजातियां- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा विकसित सौंफ की जातियों का फल शोध केंद्र बस्ती पर भी परीक्षण चल रहा है इसके अलावा अभी अधिकतर देसी जातियां ही प्रयोग में लाई जाती हैं और यह अधिक उपज भी देती हैं

आईसीआर द्वारा विकसित प्रजातियां इस प्रकार हैं- एन पी डी 32,186,269 आदि है।

कुछ अन्य उन्नत किस्म- सलेक्शन 7-9, वी सी -14-3-3,लाम सलेक्शन 1,2उदयपुर एफ 31, 32जी एफ-1, एम एस -1 आदि उन्नत किस्म आती हैं।

सिंचाई- गर्मियों में सिंचाई 7 दिन के अंतर पर करते हैं तथा ठंडियों में सिंचाई 15 दिन के अंदर पर करते हैं और 5 से 7 सिंचाईयों की कुल आवश्यकता होती है।

निकाई गुड़ाई - फसल को खरपतवार की हानि से बचने के लिए समय-समय पर निकाई करके खेत को खरपतवार रहित बनाते हैं पौधों को गिरने से बचने के लिए नवंबर दिसंबर में एक बार मिट्टी चढ़ाना आवश्यक होता है।

फसल सुरक्षा-

खर्रा- इसमें पौधे की पत्तियां तथा तने सफेद चूर्ण दिखाई पड़ने लगता है तथा पत्तियां पहले पीली पड़ने लगते हैं इसकी रोकथाम के लिए 600 मिलीलीटर डिनोकैप का 1000 लीटर पानी में मिलाकर घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

अल्टरनेरिया -इसमें पत्तियों पर धब्बे पड़ने लगते हैं इसकी रोकथाम के लिए 2 किलोग्राम कापर ऑक्सिक्लोराइड 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती खाने वाले कीट -यह कीड़े पौधों की मुलायम पत्तियां को खाकर फसल को नुकसान पहुंचाते हैं अत इनकी रोकथाम के लिए पांच प्रतिशत मैलाथियन धूल 20 किलोग्राम की दर से छिड़काव करना चाहिए।

हरि एवं मीठी सौंफ तैयार करना- सौंफ के पौधे में बुवाई के समय अनुसार दिसंबर जनवरी माह में फूल आने से शुरू हो जाते हैं फूल आने के 20 से 25 दिन बाद गुच्छे को काटकर चार-पांच दिन तक सुखाकर जिसके कारण बीजों का रंग हरा रहता और मीठा रहता है जिसके कारण बाजार मूल अधिक मिलता है और उपज इसमें कम प्राप्त होती है।

मसाले वाली सौंफ तैयार करना -इसमें जब गुच्छे पीले पड़ने लगते हैं तब गुच्छे की तुडाई करते हैं। और समय-समय पर करते रहते हैं इसमें उपज अधिक प्राप्त होती है और मूल्य थोड़ा कम प्राप्त होता है।

उपज- सौंफ की अच्छी खेती करने पर 15 से 18 कुंतल सौंफ प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।